1.1 प्रस्तावना (Introduction) -

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विविध प्रकार की समस्याओं से निपटने तथा न्यायपूर्ण समाज बनाने में शिक्षा की अपरिहार्य भूमिका को निरंतर स्वीकार किया जा रहा है। शैक्षिक क्षेत्र में विश्वविद्यालय समाज के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित हैं जिसका मुख्य उद्देश्य नए ज्ञान का सृजन करना तथा लोगों में समाज के प्रति बेहतर करने की भावना को विकसित करना है। जिससे **शिक्षण, शोध, नवाचार** और **सामुदायिक सेवाएँ** समाज के अधिकतम लोगों तक पहुँच सके। लेकिन संसाधनों की उचित उपलब्धता, सहदाता समूहों (Stack Holders) की सकारात्मक भागीदारी और शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था सुनिश्चित न होने के कारण विश्वविद्यालय अपने निर्धारित लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में उच्च शैक्षणिक संस्थानों से यह आशा की जा रही है कि वह समाज की बेहतरी के लिए ऐसा प्रारूप (Model) तैयार करे जिससे अधिकतम आवाम को स्वविकास का सुअवसर प्राप्त हो और यह तभी संभव होगा जब संस्थानों में कार्यरत कर्मचारी तथा अध्ययनरत विद्यार्थी सामजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन समाज की मान्यताओं, नियमों और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप करने पर बल देगें। अतः सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रश्न वर्तमान समय में व्यापक और बहुत चुनौती भरा है जिसमें इस बात की निरंतर चर्चा की जा रही है कि **एक विश्वविद्यालय के सामाजिक उत्तरदायित्व क्या हो सकते हैं ? और यदि है तो वह किस रूप में हैं ? तथा यह समाज के लिए कितना उपयोगी होगा ?** यह विचारणीय प्रश्न है।

उपर्युक्त प्रश्न जहाँ एक तरफ सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका को बताने की कोशिश में लगा है वहीं दूसरी तरफ विद्वानों का यह मानना है कि आज विश्व पटल पर विश्वविद्यालय सिर्फ आर्किटेक्चर सिस्टम तक ही सीमित नहीं है बल्कि समाज के प्रति इनकी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि वह शिक्षण कार्यों के अलावा सामाजिक कार्यों में भी अपनी सहभागिता को सुनिश्चित करें ताकि सतत् विकास (सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय) की संकल्पना को पूरा किया जा सके। अतः कोई भी विश्वविद्यालय इस कार्य को तभी क्रियान्वित कर पाएगा जब वह सामाजिक व तकनीकी ज्ञान को समाज के साथ जोड़कर अध्ययन करने पर बल देगा। इसके अलावा विगत कुछ शोधों ने इस बात की पुष्टि की है कि अगर दुनियाँ के तमाम

विश्वविद्यालय समाज के हित के लिए कार्य करना चाहते है तो उन्हें उन सभी सहदाता समूहों (Stack Holders) तथा क्षेत्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य करना होगा जो ज्ञान को हाशिए के समाज के लोगों तक पहुंचाने की कोशिश में लगे हैं।

'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' (USR) एक नवीन अवधारणा है और इसे सिर्फ कक्षा-कक्ष की चहारदीवारी तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा कर्मचारियों की यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि इसे व्यापक स्तर पर प्रसारित करने में विश्वविद्यालय की मदद करें ताकि समाज के समन्वित विकास हेतु विश्वविद्यालय ने जिन लक्ष्यों को निर्धारित किया है उसे पूरा कर सके। अतः इस वैश्विक दौर में उच्च शिक्षण संस्थानों ने न सिर्फ समाज की मुख्य धारा के लोगों को शिक्षित और जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास किया बल्कि उन्हें भी जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास किया है जो धर्म, भाषा, संस्कृति, गरीबी, असुरक्षा, असमानता, सामाजिक बहिष्कार आदि का दंश किसी न किसी कारणवश झेल रहे हैं। इस प्रकार व्यापक स्तर पर एक नई परिपाटी को विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि उच्च शिक्षण संस्थानों को शिक्षण कार्यों के अलावा सामाजिक कार्यों में सम्मिलित किया जा सके।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के अर्थ को लेकर व्यापक मतभेद उभरकर सामने आ रहे है जिसमें एक तरफ जहाँ सामाजिक न्याय (Social Justice) की बात की जा रही है वहीं दूसरी तरफ पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी क्षेत्रों में होने वाले बदलाओं पर सवाल उठाने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों को आगे लाया जा रहा है और ये शिक्षण संस्थान इस बात की निरंतर खोज में लगे हुए हैं कि विश्वविद्यालयों को शिक्षण कार्यों के अलावा सामाजिक गतिविधियों में कैसे शामिल किया जाए। अतः इस विषय पर समझ विकसित करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा के लिए **'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व अलायंस' (2009)** ने एक सभा का आयोजन किया तथा इसमें **चार मुद्दों -** शैक्षणिक, संज्ञानात्मक, श्रम और पर्यावरणीय प्रभाव को शामिल करते हुए 'अकादमिक जगत की भागीदारी' को समाज के लिए महत्वपूर्ण बताया।

वहीं **रोमानिया विश्वविद्यालय** के कुछ शोधार्थियों ने USR की अवधारणा पर समझ विकसित करते हुए इसके छः आयामों को रेखांकित किया जो निम्नलिखित है -

I. सहयोग-आधारित परियोजना (Alumni-Oriented Project)

II. अंतर-विश्वविद्यालय सहयोग (Inter-University Cooperation)

III. विश्वविद्यालय-उच्च-विद्यालय सहयोग (University-High-School Cooperation)

IV. विश्वविद्यालय-व्यवसाय सहयोग (University-Business Cooperation)

V. अंतरराष्ट्रीय सहयोग (International Cooperation)

VI. सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परियोजना सहयोग (Socio-Culture and Ecological Projects Cooperation)

इसी क्रम में **नाइजीरिया** के कुछ शोधर्थियों ने भी व्यावहारिक दृष्टिकोण से 'कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' (CSR) की संकल्पना के तर्ज पर विश्वविद्यालयों की जरूरतों की पहचान कर इसके छः आयामों को रेखांकित करते हुए सहदाता समूहों (Stake Holders) की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया जो निम्नलिखित हैं -

I. आर्थिक उत्तरदायित्व (Economic Responsibility)

II. परोपकारी उत्तरदायित्व (Philanthropic Responsibility)

III. पर्यावरणीय उत्तरदायित्व (Environmental Responsibility)

IV. कर्मचारी कल्याण और स्वस्थय (Employee Wellness and Health)

V. योग्य वक्ताओं को रोजगार (Employment of Qualified Lectures)

VI. कानूनी उत्तरदायित्व (Legal Responsibility)

सामाजिक उत्तरदायित्व के परिप्रेक्ष्य में **यूनेस्को (1996)** की एक रिपोर्ट को देखा जाए तो इसने भी इस बात को अंगीकार किया है कि 'आज केवल व्यक्तिगत विकास के लिए उच्च शिक्षा को स्वीकार नहीं किया जा सकता बल्कि बौद्धिक प्रगति, सतत् विकास, गरीबी उन्नमूलन तथा मानवाधिकार से संबंधित मुद्दों पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है'।

वहीं अगर **यूरोपीय परिवेश** में उच्च शिक्षा की बात की जाए तो यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है कि यहाँ विश्वविद्यालय अपने सदस्यों को समाज से जुड़कर कार्य करने का अवसर प्रदान करतें है ताकि ये सदस्य अपने शिक्षण और शोध कार्यों के अलावा समाज के साथ मिलकर कार्य करें। चूँकि मानव संसाधन ज्ञान की सबसे मूल्यवान संपत्ति है इस कारण विश्वविद्यालय की यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि वह समाज के सतत् विकास हेतु आगे आए ताकि वैश्विक पटल पर 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' की संकल्पना को साकार किया जा सके।

यूनेस्को (2009) की द्वितीय सभा ने **'उच्च शिक्षण संस्थानों के सामाजिक उत्तरदायित्व और सामाजिक जुड़ाव'** पर एक सभा का आयोजन किया और कहा कि 'उच्चतर शिक्षा एक सामाजिक अच्छाई है जिसकी विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति व्यापक समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है और यह समाज को वैश्विक चुनौतियों जैसे खाद्य पदार्थों की अनुपलब्धता, पर्यावरण परिवर्तन, जल प्रबंधन, अंतर-सांस्कृतिक संवाद, नवीकरणीय ऊर्जा और लोक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं से निपटने में सहायक होनी चाहिए'।

यूनेस्को की एक दूसरी रिपोर्ट ने भारत की 12वीं पंचवर्षीय योजना की सराहना करते हुए यह कहा गया कि भारत ने उच्च शिक्षा के भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए उच्च शैक्षणिक संस्थानों में सामाजिक उत्तरदायित्व को जिस रूप में लागू किया है उसका लाभ सिर्फ शिक्षण कार्य में लगे लोगों को ही नहीं मिल रहा है बल्कि समाज के सभी वर्गों को किसी न किसी रूप में मिल रहा है। अतः विकास की गति यदि इसी तरह से रही तो आने वाले समय में संपूर्ण राष्ट्र इससे लाभान्वित होगा।

सामाजिक उत्तरदायित्व के परिप्रेक्ष्य में विगत कुछ शोधों पर ध्यान दिया जाए तो इससे स्पष्ट होता है कि यह सिर्फ कार्पोरेट जगत तक ही सीमित था लेकिन वर्तमान विद्वानों का यह मानना है कि आज इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में सामाजिक उत्तरदायित्व की ज़िम्मेदारी सिर्फ कार्पोरेट जगत तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि अकादमिक जगत की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वह समाज के समन्वित विकास हेतु अपनी सहभागिता को सुनिश्चित करें तथा अच्छे पेशेवरों के अलावा ऐसे नागरिकों का भी निर्माण करें जो समाज में व्याप्त असमानताओं (जातिगत, वर्ग आधारित, जेंडर आधारित, क्षेत्रगत आदि) चुनौतियों, कुरीतियों आदि को दूर करने में समाज के लोगों की मदद करें। **वर्गास लिओसा** (2001) ने इन चुनौतियों को उजागर करते हुए **थामस मूर (1994)** के विचारों का समर्थन करते हुए यह कहा है कि 'वर्तमान समय में आने वाली यह चुनौतियाँ हमें स्व (Self) की देख-भाल करने की प्रेरणा दे रही हैं और यह सिर्फ किसी व्यक्ति विशेष के लिए आवश्यक नहीं है बल्कि अकादमिक उपक्रम के लिए भी आवश्यक है'।

सामाजिक उत्तरदायित्व के परिप्रेक्ष्य में अगर **मेगिनो (2012)** के विचार को देखा जाए तो इन्होंने **अरस्तू** के विचारों का समर्थन करते हुए यह कहा कि "सामाजिक अच्छाई सिर्फ अच्छे नागरिकों को ही पैदा करती है और उनके अंदर एक ऐसी विचारधारा को जन्म देती है जो अपने तथा समाज दोनों के लिए उपयोगी होता है" (लौ मैरीनॉफ, 2004)। अतः यह समाज की एक अपरिहार्य जिम्मेदारी है। इसी क्रम में अगर **सिसरो** के विचार को देखा जाए तो इनका यह कहना है कि "सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार विश्वविद्यालयों में गुण, ज्ञान, न्याय, ताकत और संयम मौजूद होते हैं" (लौ मैरीनॉफ, 2004)।

1.2 संक्रियात्मक परिभाषाएँ (Operational Definitions) -

प्रस्तुत अध्ययन में पाँच मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है -

I. **उच्च शैक्षणिक संस्थान** या **विश्वविद्यालय** से आशय उन संस्थानों से है जहाँ कम से कम स्नातक स्तर की कक्षाएँ नियमित संचालित होती हों और उपाधि प्रदान की जाती हों।

II. **कर्मचारी** से आशय उन सभी लोगों से हैं जो विश्वविद्यालय में शैक्षणिक या गैर-शैक्षणिक (उच्च-स्तरीय) पदों पर नियमित अथवा अनियमित रूप से कार्य कर रहे हों।

III. शोधार्थी से आशय उन छात्रों से है जो विश्वविद्यालय में पी-एच.डी तथा एम.फिल में अध्ययनरत् हैं।

IV. विद्यार्थी से आशय उन छात्रों से है जो विश्वविद्यालय में स्नातक (वे समस्त छात्र जो राष्ट्रीय सेवा योजना का एक वर्ष का अनुभव रखते हो) तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं।

V. सामाजिक उत्तरदायित्व एक नैतिक ज़िम्मेदारी है जिसका निर्वहन समाज के उन लोगों द्वारा किया जाएगा जो विश्वविद्यालय के शैक्षणिक या गैर-शैक्षणिक पद पर कार्यरत कर्मचारी हों अथवा शिक्षण कार्यों में लगे विद्यार्थी तथा शोधार्थी हों।

1.3 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (Theoretical Framework) -

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि किसी भी शोध का मूल आधार होती है और इसके आधार पर ही संपूर्ण शोध की आधारशिला रखी जाती है। प्रस्तुत शोध कार्य 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायतिव' विषय पर आधारित है तथा वैश्विक स्तर पर यदि इसकी समीक्षा की जाए तो इसका आरंभ **चिली (2001)** में **तेरह** विश्वविद्यालयों के सहयोग के प्रयासों के परिणामस्वरूप हुई। इसका मुख्य लक्ष्य 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' (USR) की संकल्पना को चिली के विश्वविद्यालयों तक पहुँचाना था। इस संदर्भ में **चार आयामों** को भी सुझाया गया जो निम्नलिखित हैं -

I. उत्तरदायी परिसर (Responsible Campus)

II. सामाजिक ज्ञान प्रबंधन (Social Knowledge Management)

III. व्यावसायिक तथा नैतिक शिक्षा (Professional and Ethical Education)

IV. सामुदायिक सहभागिता (Community Engagement).

लेकिन वर्तमान समय में उच्चतर शिक्षा के सामाजिक उत्तरदायित्व के हितदाता समूहों की पहचान, उनके संवेदन (Perception) की समझ, सेवा संतुष्टि तथा सेवा की आकांक्षा, समूह संबंध निर्माण आदि मुद्दों को भी इस शोध कार्य के अंतर्गत समाहित किया जा रहा है। अतः USR के परिप्रेक्ष्य में आने वाले

इन नए लक्ष्यों का सामना करना पड़ेगा ताकि सामाजिक उत्तरदायित्व में नई सांस्थानिक रणनीतियों में आने वाले चुनौतियों का सामना कर 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' की संकल्पना को साकार किया जा सके।

1.4 शोध का औचित्य (Rationale of Research) -

सामाजिक उत्तरदायित्व (SR) एक व्यापक शब्द है जिसका प्रयोग एक लंबे अंतराल से किसी न किसी रूप में किया जा रहा है। लेकिन वर्तमान सामाजिक संरचना और जन-भागीदारी में कमी के कारण वैश्विक स्तर पर यह चिंता जाहिर होने लगी कि कैसे जन-भागीदारी द्वारा समाज के विकास की गति को आगे बढ़ाया जाए। तत्पश्चात् एक नई परिपाटी के रूप में 'कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' (CSR) की अवधारणा का विकास हुआ। लेकिन 'अमेरिका' और 'यूरोप' के विद्वानों ने 'हैलीफ़ैक्स उद्घोषणा' (1981) में इस बात को स्वीकार किया कि 'इस बदलते वैश्विक परिवेश में सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा को सिर्फ कार्पोरेट जगत ही सीमित नहीं रखा जा सकता बल्कि उच्च शैक्षणिक संस्थानों की यह नैतिक ज़िम्मेदारी होनी चाहिए कि वह समाज के सतत् विकास हेतु ऐसे ज्ञान का सृजन करे जो लोगों के विकास का मार्ग प्रसस्त करे'। इस प्रकार एक नई परिपाटी के रूप में USR की अवधारणा का विकास हुआ और इसमें इस बात की निरंतर चर्चा की जा रही है कि USR को किस रूप में लागू किया जाए।

1.5 समस्या कथन (Research Problem) -

कोई समाज समस्याओं से परे नहीं होता। इस संदर्भ में अगर भारत को देखा जाए तो यह एक बहुआयामी और बहुसंस्कृति वाले समाज का देश रहा है। इस कारण यहाँ गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भूखमरी, कुपोषण, प्रतिमान क्षरण आदि चहुओर दिखाई देता है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थानों से यह आशा की जा रही है कि वह एक ऐसा मॉडल तैयार करे जिससे इस समस्याओं से निजात मिल सके। तत्पश्चात् भारत ने 12वीं पंचवर्षीय योजना में **चिली** के तर्ज पर 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' (USR) की संकल्पना को क्रियान्वित करते हुए विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों से यह आशा की है कि वह समाज के 'सतत् विकास' में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करेंगे। लेकिन संसाधनों की

अनुपलब्धता और उनकी निराशा के कारण विश्वविद्यालय अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन में पिछड़ा नजर आ रहा है। अतः इस शोध के माध्यम से USR के विविध आयामों जैसे 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' का स्वरूप तथा क्षेत्र कैसा हो ? इसका क्रियान्वयन कैसे हो ? इसके मार्ग में आने वाली समस्याएँ क्या हैं ? इत्यादि को समझने का प्रयास किया जाएगा ताकि इससे संबंधित समस्याओं की पहचान व समाधान प्रस्तुत किया जा सके। इसलिए शोधार्थी का समस्या कथन **"विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व: कार्यान्वयन, समस्याएँ एवं समाज कार्य हस्तक्षेप"** है।

1.6 शोध प्रश्न (Research Question) -

I. विश्वविद्यालय, सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन किस प्रकार कर रहे हैं?

II. सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन में विश्वविद्यालय को किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है?

III. विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व में समाज कार्य हस्तक्षेप क्या हो सकते हैं?

1.7 शोध उद्देश्य (Objectives) -

I. विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा और इसके कार्य क्षेत्र का अध्ययन करना।

II. विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व में उदित हो रही समस्याओं को ज्ञात करना।

III. विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व में संभावित समाज कार्य हस्तक्षेप की तलाश करना।

1.8 कार्य योजना की रूपरेखा (Outline of Plan Work) -

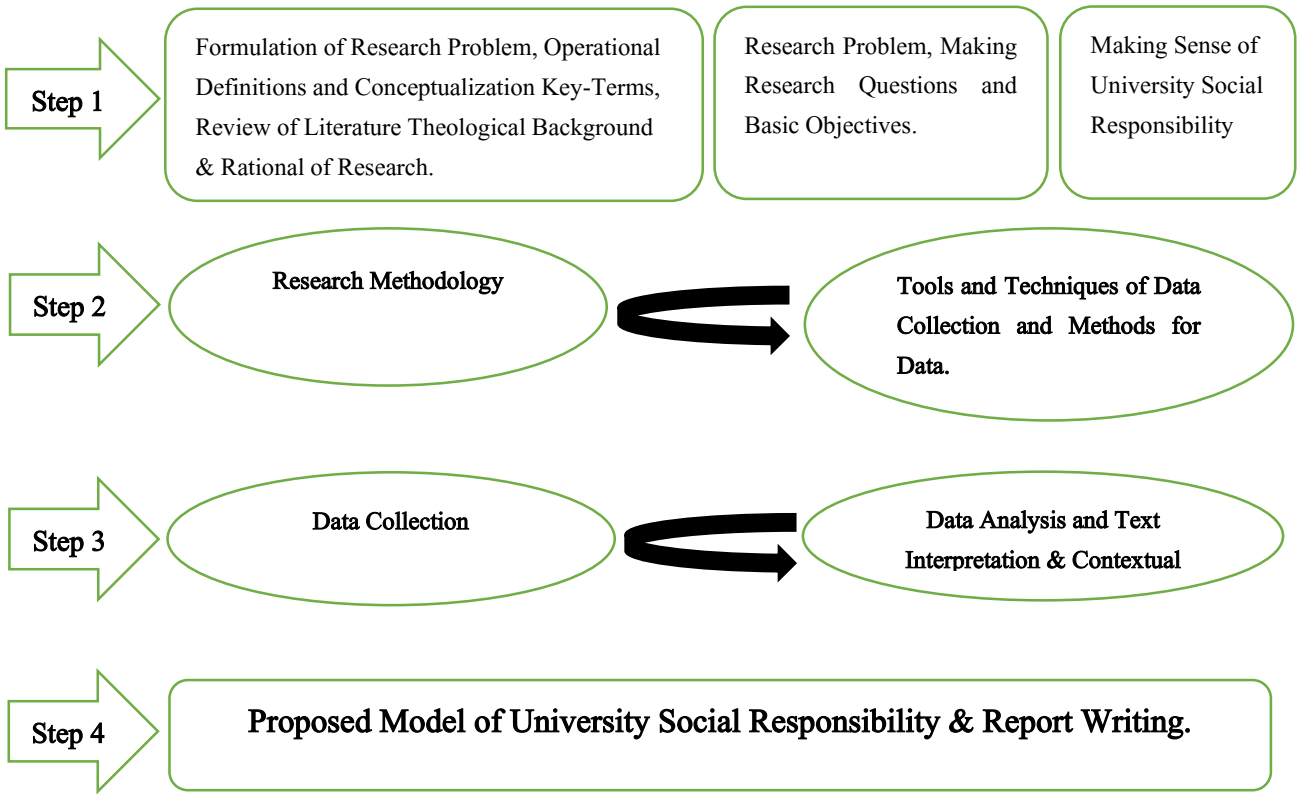

1.9 शोध प्रविधि (Research Methodology) -

यह अध्ययन विश्वविद्यालय में कार्यरत शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों और विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यों से संबंधित है। अतः यह शोध अपने आप में 'गुणात्मक प्रवृत्ति' (Qualitative Nature) पर आधारित है। इसके अंतर्गत शोध उद्देश्य के अनुरूप समस्त उत्तरदाताओं का एक प्रारूप तैयार किया गया और प्राप्त आँकड़ों का गुणात्मक विश्लेषण भी किया गया है।

1.9.1 शोध अभिकल्प (Research Design) -

प्रस्तुत अध्ययन विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्य क्षेत्र की व्याख्या और उसके वर्णन से संबंधित है इसलिए इसमें 'वर्णनात्मक शोध अभिकल्प' का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत USR से संबंधित तथ्यों का विस्तार से वर्णन एवं विश्लेषण किया गया है।

1.9.2 निदर्शन (Sampling) -

प्रस्तुत शोध कार्य में निदर्शन के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं को समाहित किया गया है -

I. निदर्शन पद्धति का चयन (Sampling Method) -

प्रस्तुत शोध में 'असंभावित प्रतिदर्शन' (Non-Probability Sampling) के 'उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन' (Purposive Sampling) का प्रयोग कर कुल 100 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली भरवाई गयी है।

II. निदर्शन इकाई का निर्धारण (Determination of Sampling Method) -

समय और संसाधन को दृष्टिगत रखते हुए निदर्शन इकाई के रूप में 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा' (महाराष्ट्र) में कार्यरत शैक्षणिक कर्मचारियों, शोधार्थियों (पी-एच.डी तथा एम.फिल), स्नातकोत्तर विद्यार्थियों तथा स्नातक स्तर के वे सभी छात्र जो 'राष्ट्रीय सेवा योजना' (NSS) का एक वर्ष का अनुभव रखते हैं उनका चयन किया गया है। क्योंकि वर्धा विश्वविद्यालय ने **'उन्नत भारत अभियान'** के तहत जो पाँच गाँव (गणेशपुर, चिकली, जामिनी, तमसवाड़ा और बोरधरन) गोद लिए हैं उसका वह 'सामाजिक उत्तरदायित्व' के क्षेत्र में किस तरह से कार्य कर रहा है इसका भी अध्ययन करना था।

III. निदर्शन आकार का निर्धारण (Determination of Sample Size) -

निदर्शन आकार के चयन हेतु 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा' (महाराष्ट्र) में कार्यरत शैक्षणिक कर्मचारियों, शोधार्थियों (पी-एच.डी तथा एम.फिल), स्नातकोत्तर विद्यार्थियों तथा वे समस्त स्नातक स्तर के छात्र जो 'राष्ट्रीय सेवा योजना' (NSS) का एक वर्ष का अनुभव रखते हैं उससे प्रत्येक में से 20 का चयन कर कुल 100 उत्तरदाताओं को शोध इकाई में शामिल किया गया है। इसे हम निम्न तालिका में देख सकते हैं -

शैक्षणिक कर्मचारी	20
पी-एच. डी शोधार्थी	20
एम. फिल. शोधार्थी	20
स्नातकोत्तर विद्यार्थी	20
NSS के वे विद्यार्थी जो एक वर्ष का अनुभव रखते हैं	20

चित्र : 01 - कुल उत्तरदाताओं की संख्या

1.9.3 आँकड़ों का संग्रहण (Collection of Data) -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु प्राथमिक (Primary) तथा द्वितीयक (Secondary) आंकड़ा संग्रहण विधि का प्रयोग किया गया है।

I. प्राथमिक आंकड़ा संग्रहण विधि - इसके अंतर्गत 'प्रश्नावली' (Questionnaire) तथा 'अवलोकन' (Observation) विधि का प्रयोग किया गया है।

II. द्वितीयक आंकड़ा संग्रहण विधि -

इसके अंतर्गत 'दस्तावेज़ अध्ययन विधि' (Document Study Method) का प्रयोग किया गया है।

1.9.4 उपकरण एवं तकनीक (Tool and Technique) -

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण हेतु निम्नलिखित तकनीक व उपकरण प्रयोग में लाया गया है -

I. प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method) -

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संग्रहण हेतु 'संरचित प्रश्नावली' (Structured Questionnaire) का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम शोधकर्ता ने उनसे व्यक्तिगत अनुमति ली और अध्ययन विषय पर बनी प्रश्नावली को स्वयं उत्तरदाता के पास जाकर दिया। इस प्रश्नावली में कुल 14 प्रश्न हैं जिसमें 11 बंद तथा 3 खुले प्रश्न

हैं। इसके द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि शिक्षण कार्य के अलावा सामाजिक कार्यों में इनकी जन भागीदारी है या नहीं।

II. अवलोकन विधि (Observation Method) -

इसके अंतर्गत 'असहभागी अवलोकन' (Non-Participatory Observation) विधि का प्रयोग सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों के अवलोकन हेतु किया गया।

III. दस्तावेज़ अध्ययन विधि (Document Study Method) -

इसके अंतर्गत शोध विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्र, कार्यशाला आदि से जानकारी एकत्रित कर आंकड़ों का समुचित विश्लेषण किया गया है। इसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है -

(A) शोध पत्र (Research Paper) -

- A Review of University Social Responsibility and Its Role in Brand Image in India.
- A New Paradigm in Higher Education: University Social Responsibility (USR).
- A Frame Work for University Social Responsibility and Sustainability: The Case of South Valley University Egypt.
- Community Engagement, Social Responsibility and Social Work Profession: Emerging Scope and Prospects.
- Fostering Social Responsibility in Higher Education in India.
- Forms of Community Engagement.

(C) वेब पेज (Web Page) -

- www.jstor.org
- Journals.sagepub.com

1.9.5 विश्लेषण (Analysis) -

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण हेतु 'अंतर्वस्तु-विश्लेषण' (Content Analysis) विधि का प्रयोग किया गया है एवं आँकड़ों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण पाई-चार्ट तथा सारणी द्वारा किया गया है।

1.9.6 लेखन पद्धति (Writing Method) -

प्रस्तुत शोध में संदर्भ लेखन पद्धति के रूप में **APA** (American Psychological Association) का प्रयोग किया गया है।

1.9.7 शोध परिसीमन (Delimitations of Study) -

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के शोध विषय की सीमा **'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा'** में अध्ययनरत शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों के सामाजिक उत्तरदायित्वों के अध्ययन तक ही सीमित है।

1.10. साहित्य पुनरावलोकन (Review of Literature) -

साहित्य पुनरावलोकन किसी भी शोध का एक मूल आधार होता है और यह शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध में उन तथ्यों की समीक्षा की गई है जो अध्ययन विषय से किसी न किसी रूप से संबंधित है। अतः इसके अंतर्गत जिन शोध-पत्रों का अध्ययन किया गया है वह निम्नलिखित हैं -

एंजेल रीना और मित्तल अमित (2016) ने अपने शोध में विश्वविद्यालय को समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में अंगीकार करते हुए यह कहा है कि विश्वविद्यालय का कार्य सिर्फ विद्यार्थियों को शिक्षा देना ही नहीं है बल्कि उनकी यह नैतिक तथा सामाजिक ज़िम्मेदारी भी है कि वह समाज के विकास हेतु ऐसी शिक्षण पद्धति का विकास करें जिससे समाज के अधिकतम अवाम को विकास का सुअवसर मिल सके। विद्वानों ने इसके लिए तकनीकी तथा रोजगारपरक शिक्षा की बात की और कहा कि अगर वैश्विक स्तर पर किसी भी विश्वविद्यालय को अपने आस-पास के समाज की उन्नति के लिए कार्य करना है तो उसे सहदाता समूहों (Stack Holders) के साथ मिलकर कार्य करना होगा।

चेन शू-हसिंग, नसोंगखला जैटिप & डोनाल्डसन जे.अना. (2015) ने अपने शोध में शिक्षा को एक बुनियादी उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए यह कहा कि शिक्षा सामाजिक विकास की धूरी है और सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए एक उपकरण का कार्य करती है। इसमें शिक्षा को 'एक ड्राईवर, एक वाहन और एक ट्रीगर के रूप में स्वीकार किया गया है'। इस शोध में यह भी बताया गया है कि 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' सामाजिक आंदोलनों के लिए एक दर्शन के रूप में कार्य करता है। इसलिए वर्तमान समय में 'सामाजिक उत्तरदायित्व' को विश्वविद्यालयी दर्शन के भाग के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता है।

मोहम्मद ए.टी.ई. (2015) ने अपने शोध में दक्षिण घाटी के विश्वविद्यालयों के माध्यम से यह प्रश्न उठाया गया कि वैश्विक पटल पर आज पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी के क्षेत्र में जिस तरह से निरंतर बदलाव आ रहे हैं उसके क्या परिणाम निकलकर सामने आएंगे। इस तथ्य की पुष्टि हेतु दक्षिण घाटी के विश्वविद्यालय द्वारा एक सभा का आयोजन किया तथा यह सुझाव दिया कि दुनियाँ के सभी

विश्वविद्यालयों में एक ऐसा ढाँचा निर्मित किया जाए जिससे दृष्टि, मिशन, मूल्य, लक्ष्य और प्रबंधन प्रणाली की स्थापना और रख-रखाव के माध्यम से नीतियों का विस्तार, कार्यवाही का प्रावधान, सामुदायिक तथा पर्यावरण के वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने लिए हितधारकों के साथ सेवाओं के मूल्यांकन और सामाजिक सहयोग के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किए जा सके। इसमें शोधकर्ता ने 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' के संदर्भ में चार अलग-अलग मॉडल भी सुझाए हैं जिसमें -

I. **सांगठनिक प्रभाव -** इसके अंतर्गत यह बताया गया है कि विश्वविद्यालय के प्रत्येक कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

II. **संज्ञानात्मक प्रभाव -** इसके अंतर्गत ज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए यह कहा गया कि विश्वविद्यालय को शोध कार्य के अलावा तकनीकी तथा वैज्ञानिक शिक्षा पर भी बल देना चाहिए।

III. **सामाजिक विकास -** इसके अंतर्गत इस बात को स्पष्ट रूप से उल्लेखित करते हुए यह कहा गया कि यदि किसी समाज का सतत् विकास तभी संभव है जब समाज के सभी लोग ज्ञान का स्थानांतरण एक दूसरे के लिए करेंगे।

IV. **शैक्षणिक प्रभाव -** इसके अंतर्गत एक ऐसे जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण करने पर बल दिया गया जो समाज के लिए उपयोगी हो सके।

ग्यूफ़र लिडीला & राटो सिल्वा इ. (2014) ने अपने शोध में बताया कि विश्वविद्यालय सिर्फ आर्किटेक्चर सिस्टम तक ही सीमित नहीं है बल्कि विश्वविद्यालयों से यह आशा की जा रही है कि वह तकनीकी तथा रोजगारपरक शिक्षा मुहैया कराए। इस शोध पत्र में यूरोपीय देशों के उच्च शिक्षण संस्थानों का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि ये संस्थान अपने कर्मियों को समाज से जुड़कर कार्य करने का अवसर प्रदान करते हैं। इसमें विश्वविद्यालय के सामाजिक उत्तरदायित्व को रोजगारपरक शिक्षा व हाशिए के समाज के लोगों के लिए शिक्षा मुहैया करने की बात की गयी है।

बोएर पीटरनल (2012) ने अपने शोध में उच्च शिक्षण संस्थान को समाज का महत्वपूर्ण अंग माना और कहा कि उच्च शिक्षण संस्थान समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं और उनकी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि वह छात्रों के अंदर सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय समझ विकसित करें ताकि उनके अंदर समाज की समझ विकसित हो। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि यदि इस तरह के छात्र समाज में होंगे तो निश्चित रूप से न सिर्फ शिक्षण संस्थानों को लाभ होगा बल्कि उन संस्थानों को भी लाभ होगा जो इन्हें रोजगार देंगे। क्योंकि इन छात्रों को यह पता होता है कि समाज की मुख्य समस्या क्या है? और इस समाधान कैसे करना है? इसमें उच्च शिक्षण संस्थानों को न सिर्फ ज्ञान के केंद्र के रूप में स्वीकार किया गया है बल्कि उनकी जिम्मेदारियों को बताते हुए यह कहा गया है कि आज विश्वविद्यालयों को सबसे अधिक समाज के साथ जुड़कर करने की आवश्यकता है। इसमें विश्व के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को शिक्षण कार्य के अलावा सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होने की बात कही गई और अगर विश्वविद्यालय इस परिपाटी को अपनाते हैं तो निश्चित तौर पर आने वाले समय में एक नई विचारधारा की शुरूआत होगी।

टंडन राजेश (2012) ने अपने शोध पत्र में भारत के आर्थिक विकास के साथ वर्तमान भारत में गरीबी, अशिक्षा, आर्थिक असमानता, अल्पसंख्यकों पर हिंसा, पर्यावरण क्षरण आदि समस्याओं पर जब विचार किया तो यह प्रश्न निकालकर सामने आए कि आखिर क्या कारण हैं कि भारत के आर्थिक विकास के बावजूद भी इस तरह की समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है। वहीं दूसरी तरफ इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा की महत्ता को स्वीकार करते हुए यह कहा कि यदि किसी समाज को विकास के पथ पर अग्रसर करना है तो उसके लिए शिक्षा अतिआवश्यक है। क्योंकि शिक्षा सामाजिक बदलाव व सामाजिक न्याय के साथ-साथ व्यक्तिगत समृद्धि व कल्याण में अपनी भूमिका अदा करती है। इस शोध में सामाजिक विकास के साथ ही शिक्षा की महत्ता को भी स्वीकार किया गया है।

अल्वारेज़ अंबर विगमोर & लोजनों मेर्केडेस रूइज़ (2012) ने अपने शोध पत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों के सामाजिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में यह कहा है कि उच्च शिक्षा ज्ञान का केंद्र हैं और जिन संस्थानों ने इस अवधारणा को स्वीकार किया है वह उन संस्थानों से बिलकुल अलग हैं जो इस विचारधारा से अपरिचित हैं। यह अनुसंधान दुनियाँ में 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' और स्थिरता कार्यक्रमों की अवधारणा पर उपलब्ध साहित्य का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। इसमें इस बात की भी चर्चा की गई कि सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा वर्तमान परिवेश के लिए नई है और वैश्विक पटल पर जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं उनकी पुनः समीक्षा की जानी चाहिए ताकि समग्र विचार को प्रस्तुत किया जा सके। इस शोध की अगली कड़ी में यह भी कहा गया कि उच्च शिक्षण संस्थानों ने दुनियाँ भर में स्थिरता के मुद्दों को स्वीकार करने और उनके परिसरों तथा समुदायों को इस तरह के प्रयासों में शामिल होना आरंभ कर दिया जो इन संगठनों में अखंडता और नैतिक मूल्यों के विकास तथा हितधारकों के साथ संबंध बनाने में सहयोग प्रदान कर रहें हैं।

मेहता एस.के. (2011) ने अपने शोध में 'कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' (CSR) और 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' (USR) के संबंधों के संदर्भ में चर्चा की है। इसमें 'अड़ेलाइड विश्वविद्यालय' ने अपने परिसरों में 'सामाजिक उत्तरदायित्व' की प्रथा को आरंभ करने का निर्णय लिया। यह एक ऐसी प्रथा की शुरूआत थी जिसमें दुनियाँ के तमाम विश्वविद्यालयों को इस बात के लिए जागरूक किया जाने लगा कि कैसे कार्पोरेट जगत की तरह अकादमिक जगत में भी सामाजिक उत्तरदायित्व की प्रथा को आरंभ किया जाए। इसमें विश्वविद्यालय के कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों ने स्थानीय स्तर पर लोगों के अंदर जागरूकता पैदा करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया और इस आयोजन के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय के आस-पास के लोगों ने व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास पर भी ध्यान देना आरंभ किया। इसमें इस बात को भी अंगीकार किया गया कि 'सामाजिक उत्तरदायित्व को जिस तरह से कार्पोरेट जगत में मुनाफा के रूप में किया जा रहा है उसी तरह से अकादमिक जगत में नहीं किया जाना चाहिए'। क्योंकि 'अकादमिक जगत' का कार्य ही होता है कि वह शिक्षण, शोध और नवाचार द्वारा समाज का समन्वित विकास करें ताकि समाज के वंचित लोगों का सामाजिक तथा बौद्धिक विकास हो सके। इसमें

'CSR' के संदर्भ में यह भी कहा गया कि आज जिस रूप में आज 'सामाजिक उत्तरदायित्व' के क्षेत्र में जिस तरह से 'कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' को मान्यता प्राप्त है उस रूप में किसी अन्य संस्थान को नहीं है क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों पर जितनी पहुँच इनकी है उस तरह किसी अन्य के पास नहीं है। आगे इस बात को भी स्वीकार किया गया कि सिर्फ संसाधनों की पहुँच से ही सामाजिक उत्तरदायित्व को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता बल्कि यह आवश्यक है कि संसाधनों की पहुँच के साथ-साथ सामुदायिक भागीदारी भी हो।

मरिनोफ़ लौ (2004) ने 'विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व' और 'कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' की कार्य प्रणाली पर सवाल उठाते हुए यह कहा कि आज बदलते परिदृश्य में 'सामाजिक उत्तरदायित्व' की ज़िम्मेदारी को केवल कार्पोरेट जगत तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता बल्कि उच्च शैक्षणिक संस्थानों की भी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि वह समाज के सतत् विकास हेतु 'हितदाता समूहों' (Stack Holders) के साथ मिलकर कार्य करें। इसमें **विघट (2010)** ने 'कनाडियन विश्वविद्यालयों' के अध्ययन में पाया कि यहाँ के प्रेसिडेंट 'टिकाऊ विकास' (Sustainable Development) की संकल्पना से अपरिचित हैं। अतः इसके संदर्भ में आने वाली दो चुनौतियों का भी उल्लेख किया जिसमें 'वित्तीय' और 'विश्वविद्यालय कर्मचारियों' (छात्र, प्रोफेसर आदि) के बीच समझ और जागरूकता की कमी को बताया।

द्वितीय एशिया-यूरोप एजुकेशन कार्यशाला (2011) इस कार्यशाला का आयोजन इंसब्रुक विश्वविद्यालय द्वारा 5-7 जून 2011 को किया गया। इसमें ASEM (Asia-Europe Meeting) के कुल 26 विद्वान एकत्रित हुए जिसमें विश्वविद्यालय के कर्मचारी, शोधार्थी, नीति निर्माता, मीडिया, चिकित्सा आदि क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञ शामिल थे। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य तकनीकी ज्ञान को अन्य देशों में प्रसारित करना था। इस कार्यशाला की थीम **"ज्ञान समुदाय: विश्वविद्यालय और उसके सामाजिक उत्तरदायित्व"** रखा गया था। इस कार्यशाला में ज्ञान के प्रचार-प्रसार की बात की गई और यह कहा गया कि ज्ञान चाहे किसी भी समाज का हो वह ज्ञान और और यदि यह ज्ञान किसी भी समाज के लिए उपयोगी हो तो उसे अवश्य मिलना चाहिए क्योंकि ज्ञान किसी व्यक्ति विशेष की एकाधिकार की वस्तु नहीं है।

सारांश -

उपर्युक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि -

I. विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व (USR) एक नवीन अवधारणा है जिसका उद्देश्य किसी विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा के अतिरिक्त सामाजिक गतिविधियों में दिए गए सहयोग से है।

II. इसके अंतर्गत समाज और उच्च शैक्षणिक संस्थानों के बीच संवाद को बेहतर बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

III. इसके अंतर्गत उच्च शैक्षणिक संस्थानों और छात्रहित सामाजिक स्थिति के बीच समन्वय बनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है ताकि सिद्धांत और व्यवहार के बीच की दूरी कम हो सके।

इस शोध में भारतीय परिप्रेक्ष्य में USR की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। उपर्युक्त साहित्य पुनरावलोकन में सैद्धांतिक स्तर पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में USR की चर्चा तो है परंतु क्रियान्वयन में क्या समस्याएँ उत्पन्न हो रही है यह स्पष्ट नहीं है। अतः इस शोध में इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है।